भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 986

24 जुलाई, 2026 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

एकीकृत आईएसओ मानकों का कार्यान्वयन

986. श्री बिप्लब कुमार देब:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली ने अपनी अनुसंधान प्रयोगशालाओं में गुणवत्ता, सुरक्षा और पर्यावरणीय अनुपालन को मजबूत करने के लिए किसी एकीकृत प्रबंधन प्रणाली को अंगीकृत किया है;

(ख) यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) सरकार द्वारा आयुर्वेद की दवाई में मौजूद तत्वों पर नैदानिक-पूर्व भेषज विज्ञान अनुसंधान को मानकीकृत करने के लिए क्या उपाय किए गए हैं; और

(घ) आईएसओ मानकों को अंगीकृत किए जाने का अनुसंधान और प्रयोगशाला दक्षता पर क्या प्रभाव पड़ा है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) और (ख): भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान (एआईआईए), नई दिल्ली की औषधि विज्ञान प्रयोगशाला को गुणवत्ता, सुरक्षा तथा पर्यावरणीय अनुपालन के सुदृढ़ीकरण के लिए 6 नवंबर, 2025 को एकीकृत प्रबंधन प्रणाली की मान्यता प्रदान की गई है।

प्रयोगशाला को निम्नानुसार मान्यता प्राप्त हैः

- आईएस/आईएसओ 9001:2015 - क्यूएमएस (गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली)
- आईएस/आईएसओ 14001:2015 - ईएमएस (पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली)
- आईएस/आईएसओ 45001:2018 - ओएचएसएचएस (व्यावसायिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली)

(ग): आयुर्वेदिक फार्मूलेशन्स पर पूर्व-नैदानिक औषधि विज्ञान अनुसंधान के मानकीकरण के लिए एआईआईए द्वारा निम्नानुसार उपाय किए गए हैं:-

(i) पशुओं की खरीद, प्रायोगिक प्रोटोकॉल, जैव-अपशिष्ट प्रबंधन और रिपोर्टिंग सहित सभी प्रयोगशाला गतिविधियों के लिए मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) एवं कार्यकारी प्रक्रियाओं (ईपी) का विकास एवं कार्यान्वयन।

(ii) प्रायोगिक परिणामों में निरंतरता बनाए रखने के लिए गुणवत्ता आश्वासन तंत्र, आंतरिक लेखापरीक्षा तथा आवधिक समीक्षा व्यवस्था की स्थापना।

(iii) पूर्वनैदानिक अनुसंधान में परिशु-द्धता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए सत्यापित प्रोटोकॉल तथा प्रमाणित उपकरणों का उपयोग।

(घ): अनुसंधान परिणामों तथा प्रयोगशाला की दक्षता पर आईएसओ मानकों को अपनाए जाने का प्रभाव निम्नानुसार हैः

(i) मानकीकृत प्रक्रियाओं एवं गुणवत्ता नियंत्रण के कारण डेटा की विश्वसनीयता तथा पुनरुत्पादकता में वृद्धि हुई।

(ii) पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली के कार्यान्वयन के माध्यम से पर्यावरणीय सातत्यता, संसाधनों के इष्टतम उपयोग तथा अपशिष्ट प्रबंधन में सुधार हुआ।

(iii) सुरक्षा संस्कृति का सुदृढ़ीकरण, जिससे प्रयोगशाला में दुर्घटनाओं के जोखिम में कमी आई और स्टाफ एवं शोधार्थियों के कल्याण में सुधार हुआ।

*****